

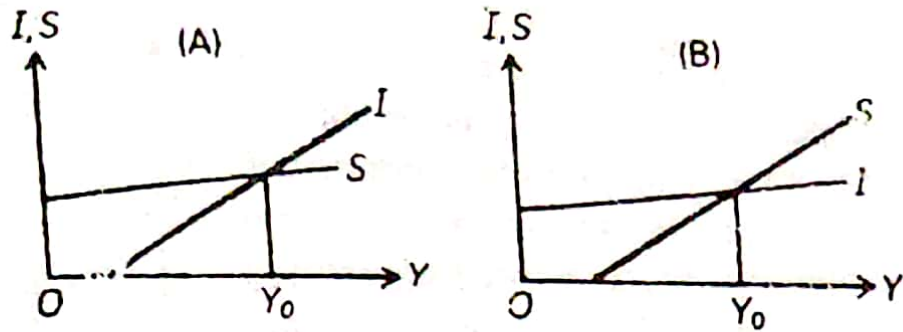
8. काल्डर का व्यापार-चक्र सिद्धांत
(Kaldor's Theory of Trade Cycle)

निकोलस काल्डर ने बचत और निवेश की केन्जीय शब्दावली के आधार पर व्यापार-चक्र के मॉडल का निर्माण किया। उसके अनुसार चक्र दबावों का प्रभाव है जो अर्थव्यवस्था की नियोजित बचत और निवेश को समानता की ओर ले जाता है। वास्तव में, नियोजित बचत और निवेश का अन्तर चक्र को लाता है। परन्तु चक्र केवल तभी संभव है जब बचत और निवेश अरेखीय (non-linear) हों।

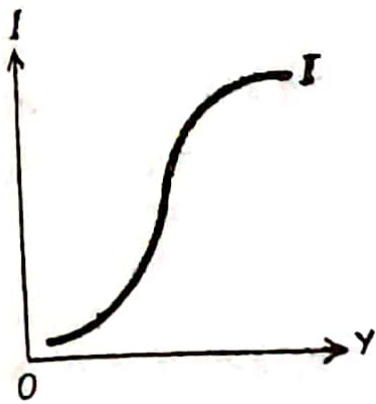
चित्र 6 (A) और (B) लीजिए जहां I और S संतुलन के आय-स्तर Y_0 पर समान हैं। परन्तु प्रत्येक स्थिति एक एकल (single) संतुलन स्थिति होती है। चित्र के भाग A में Y_0 के आगे जहां $I > S$ हैं अस्थिर संतुलन की स्थिति है क्योंकि ऐसी स्थिति असंमित प्रसार, पूर्ण रोजगार और अति स्फीति को लाएगी। दूसरी ओर, यदि $S > I$ तो यह स्थिति Y_0 के बाईं ओर नीचे की गति होने पर शून्य उत्पादन और रोजगार तथा अर्थव्यवस्था के पतन को लाती है, जैसा कि चित्र के भाग (B) भाग में दर्शाया गया है। काल्डर रेखीय बचत और निवेश फलनों को छोड़ देता है क्योंकि ये चक्र को उत्पन्न करने में असमर्थ हैं। इनकी बजाय वह अरेखीय बचत और निवेश फलनों को अपनाता है।

6. T. F. Dernburg and D. M. McDougall, *Macroeconomics*, p. 323.

एक अरेखीय निवेश फलन को चित्र 7 में दर्शाया गया है। जैसे-जैसे अर्थव्यवस्था प्रसार अवस्था की ओर अग्रसर होती है, जिसे I वक्र के साथ-साथ बाईं ओर की गति द्वारा दिखाया गया है, जहाँ I वक्र लगभग सपाट है। इसका अभिप्राय है कि आय के निम्न स्तर पर अप्रयुक्त क्षमता है तथा शुद्ध निवेश शून्य है। परन्तु जब प्रसार प्रारंभ हो जाता है तब संचित पूँजी का ऋणात्मक प्रभाव, उत्पादन एवं लाभ के ऊँचे स्तरों की करती है तो I वक्र फिर सपाट होता है और शुद्ध निवेश कम होता है क्योंकि लागत में बढ़ोतरी, बढ़ती हुई लागतें तथा उधार लेने की कठिनाइयों में वृद्धि उत्पादकों को और तेजी से प्रसार करने से रोकेगी। इससे उत्पादन में वृद्धि की दर धीमी पड़ जाती है। इसका तात्पर्य है कि वर्तमान पूँजी स्टॉक और क्षमता चालू उत्पादन से अधिक है। यह स्थिति निवेश को और कम करती है। अतः आय में गिरावट होती है तथा संचयी प्रभाव से अर्थव्यवस्था संकुचन की अवस्था में प्रवेश करती है।



चित्र 6



चित्र 7

इसी प्रकार अरेखीय बचत फलन चित्र 8 में दिखाया गया है। आय के बहुत नीचे स्तर पर बचत बहुत कम हो जाती है तथा यह ऋणात्मक भी हो सकती है। इस प्रकार, प्रसार की अवस्था के दौरान MPS अधिक होती है। आय के सामान्य स्तरों पर, बचत में वृद्धि कम दर से होगी। इसे S वक्र के मध्य भाग द्वारा दिखाया गया है। परन्तु आय के बहुत ऊँचे स्तर पर बचतें बहुत अधिक होंगी तथा लोग अपनी आय का एक बड़ा भाग बचाएंगे।

चक्र तभी दिखायी देता है जब अरेखीय बचत और निवेश वक्र इकट्ठे लाए जाते हैं, जैसाकि चित्र 9 में। चित्र A, B और C स्थितियों पर बहु-संतुलनों को दर्शाता है। इनमें से A और B स्थिर स्थितियाँ हैं तथा C अस्थिर स्थिति है। C और B स्थितियों के बीच तथा A स्थिति के नीचे, $I > S$ यह आय के स्तर को ऊँचा करेगा। A और C स्थितियों के बीच और B स्थिति के ऊपर $S > I$ है, यह आय के स्तर को नीचा करेगी।

बचाएंगे।

परन्तु A और B स्थितियाँ केवल अल्पकाल में स्थिर हैं। दीर्घकाल में ये स्थितियाँ अस्थिर होती हैं और चक्र का पथ दृष्टिगोचर होता है। इसके लिए कालडर ने पूँजी स्टॉक को एक अन्य चर के रूप में प्रयोग किया है जो बचत और निवेश के संबंधों पर प्रभाव डालता है। उसने बचत और निवेश दोनों को आय और पूँजी स्टॉक के फलन के रूप में लिया ताकि

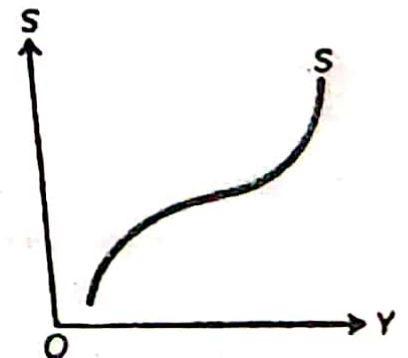
$$S = f(Y, K)$$

$$I = f(Y, K)$$

$$\frac{dS}{dY} > 0, \quad \frac{dS}{dK} > 0$$

$$\frac{dI}{dY} > 0, \quad \frac{dI}{dK} < 0$$

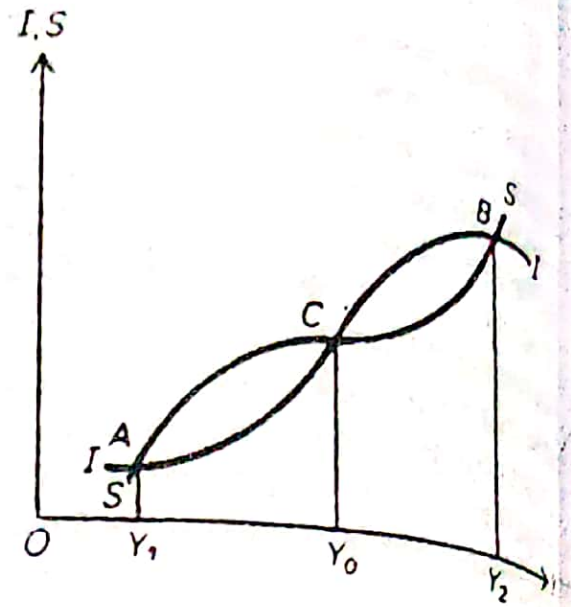
और $\frac{dI}{dY} > \frac{dS}{dY}$



चित्र 8

अर्थात्, संकुचन अवस्था में $MPI > MPS$.

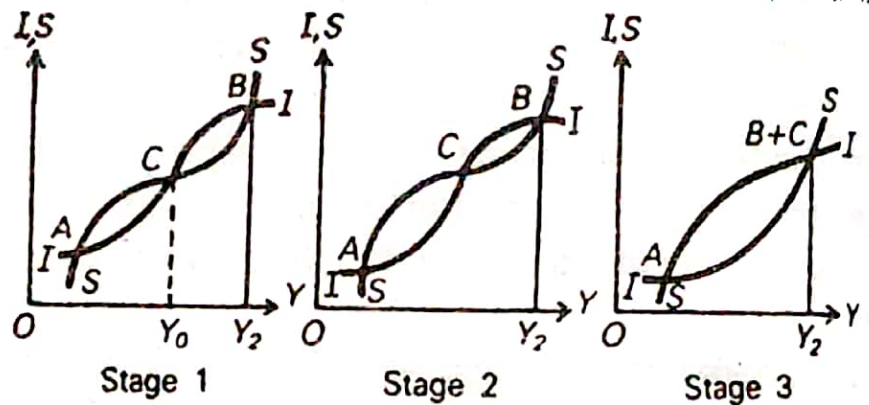
ऊपर के संबंध दर्शाते हैं कि S और I प्रत्यक्ष रूप में Y के साथ घनात्मक परिवर्तित होते हैं। S सीधा K के साथ, और I विपरीत रूप में K के साथ परिवर्तित होता है। $MPI > MPS$ संबंध अर्थव्यवस्था की स्थिरता को दर्शाता है जो इसे या तो प्रसार अथवा संकुचन की ओर ले जाएगा। चित्र 4 के अनुसार A और B की स्थितियां दीर्घकाल में 'स्विच बिन्दु' हैं। ये वे बिन्दु हैं जिन पर अर्थव्यवस्था अपनी दिशा या तो प्रसार अथवा संकुचन की ओर परिवर्तित करती है। बिन्दु C दोनों दिशाओं की ओर अस्थिर होता है। जब बिन्दु C और B नजदीक आते हैं तो चक्र की प्रसार अवस्था प्रारंभ होती है। जब वे मिलते हैं तो प्रसार समाप्त होता है और संकुचन शुरू होता है। इसके विपरीत जब बिन्दु C और A नजदीक आते हैं तो संकुचन प्रारंभ होता है। जब वे मिलते हैं तो संकुचन समाप्त होता है और प्रसार शुरू होता है।



चित्र 9

प्रसार अवस्था (Expansion Phase)

काल्डर अपने व्यापार चक्र की प्रसार अवस्था को तीन अवस्थाओं में दर्शाता है। जैसा कि चित्र 10 में स्थिति Y_0 से प्रारंभ करने की अवस्था 1 जो कि चित्र 9 के समान है। मान लीजिए कि अर्थव्यवस्था बिन्दु C पर संतुलन में है। लेकिन यह अस्थिर संतुलन का बिन्दु है। C के ऊपर की ओर स्थानान्तरण दर्शाता है कि $I > S$ जो अर्थव्यवस्था को प्रसार पथ की ओर ले जाती है। क्योंकि निवेश दर कम है, इसलिए अर्थव्यवस्था का पूंजी स्टॉक तीव्र दर से बढ़ता है। लेकिन पूंजी स्टॉक के बढ़ने से, पूंजी की सीमांत उत्पादकता कम होती है तथा निवेश वक्र नीचे की ओर शिफ्ट करता है। उसी समय जब अर्थव्यवस्था के पूंजी स्टॉक में वृद्धि होती है तो यह अर्थव्यवस्था की आय में बढ़ोतरी करता है जिससे उसकी बचत बढ़ती है। अतः बचत वक्र ऊपर की ओर शिफ्ट करता है। इस प्रकार, निवेश वक्र I के नीचे की ओर शिफ्ट करने तथा बचत वक्र S के ऊपर की ओर शिफ्ट करने से बिन्दु C बिन्दु B के पास आ जाता है जैसा कि चित्र की अवस्था 2 में दिखाया गया है। I वक्र के नीचे की ओर तथा S वक्र के ऊपर की ओर शिफ्ट करने की यह प्रक्रिया चलती रहती है जब तक कि दोनों वक्र एक दूसरे से स्पर्श नहीं करते तथा बिन्दु C और बिन्दु B मिलते नहीं हैं, जैसा कि चित्र की अवस्था 3 में दिखाया गया है। परन्तु इस स्थिति में दोनों दिशाओं में $S > I$, इसलिए नीचे की दिशा में यह एक अस्थिर असंतुलन की स्थिति है। यह अर्थव्यवस्था को नीचे की ओर ले जाती है जब तक कि अवस्था 3 में बिन्दु A नहीं पहुंचता।

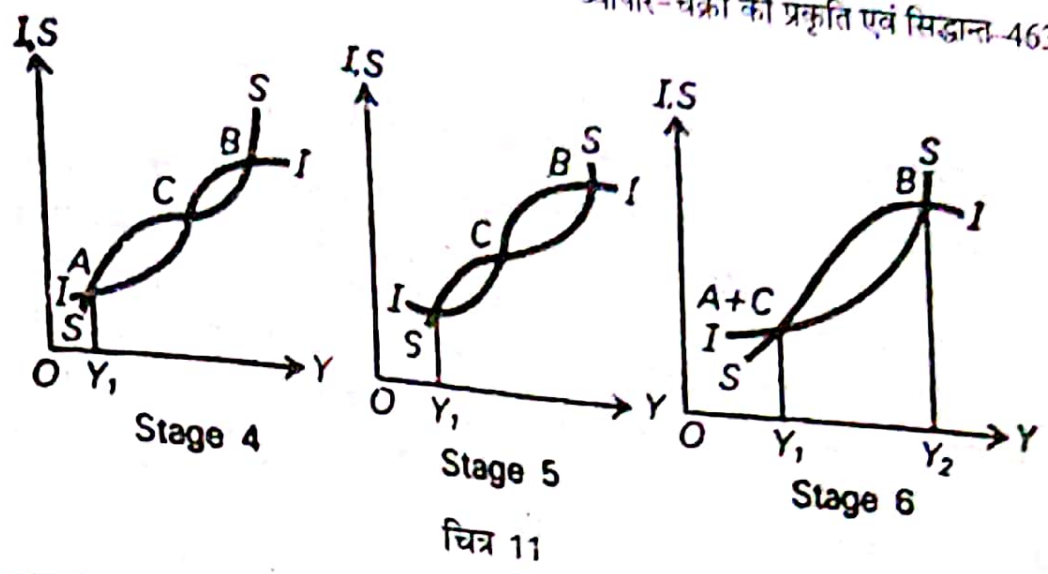


चित्र 10

संकुचन अवस्था (Contraction Phase)

व्यापार चक्र की संकुचन अवस्था को भी तीन अवस्थाओं में दिखाया गया है जैसा कि चित्र 11 में। हम स्थिति Y_1 से प्रारंभ करते हैं जो चित्र की अवस्था 4 में बिन्दु A के साथ मेल खाती है। यह अल्पकालीन स्थिर संतुलन का बिन्दु है लेकिन आय के बहुत निम्न स्तर का। परन्तु आय के इतने नीचे स्तर पर दीर्घकाल में अप्रयुक्त क्षमता के कारण पूंजी स्टॉक कम होता है तथा निवेश वक्र I ऊपर की ओर शिफ्ट करता है। साथ ही बचत कम हो जाती है जो बचत वक्र को नीचे की ओर शिफ्ट कर देती है। इस प्रकार, I वक्र के ऊपर की ओर शिफ्ट

करने तथा S वक्र के नीचे की ओर शिफ्ट करने से A और C स्थितियां नबदोक आ जाती हैं जैसाकि चित्र की अवस्था 5 में दिखाया गया है। यह प्रक्रिया धीरे-धीरे चालू रहेगी जब तक कि I और S वक्र स्पर्श नहीं करते तथा स्थितियां A और C मिल नहीं जातीं जैसा कि चित्र में अवस्था 6 में दिखाया गया है। परन्तु Y_1 आय स्तर पर A + C की यह स्थिति ऊपर की दिशा में अस्थिर है क्योंकि $I > S$ यह प्रसारात्मक प्रक्रिया की ओर ले जाएगी जब तक कि अर्थव्यवस्था बिन्दु B पर आय के ऊँचे स्तर Y_2 पर नहीं पहुँच जाती है। बिन्दु C से I तथा S वक्र धीरे-धीरे, चित्र 10 अवस्था 1 में दिखाई गई स्थितियों पर पहुँच जाएंगे, और चक्रिय प्रक्रिया पुनः प्रारम्भ हो जाती है। इस प्रकार, काल्डर की चक्रिय प्रक्रिया आत्मजनक (self-generating) है।



चित्र 11

काल्डर के अनुसार, वे शक्तियां जो नीचे की ओर मोड़ बिन्दु लाती हैं वे उच्चस्तर पर निश्चित नहीं होतीं। तेजी अपने-आप ही निश्चित रूप से समाप्त हो जाएगी। परन्तु मंदी स्थैतिक स्थिति में पड़ सकती है और वहीं रह सकती है जब तक कि वाह्य परिवर्तन (जैसे कि नये आविष्कारों की खोज या नई मार्किटों का खोलना) उसके बचाव पर नहीं आते। फिर, काल्डर के माडल में चक्र समान लंबाई और अवधि के आवश्यक तौर से नहीं होते हैं और न ही प्रसार और संकुचन आवश्यक तौर से समरूपक होते हैं। वास्तव में, I और S वक्रों की ढलानों तथा चक्र की प्रत्येक अवस्था में वे किस दर से शिफ्ट करते हैं, इस पर निर्भर करते हैं।

काल्डर अपने व्यापार चक्र सिद्धान्त की व्याख्या करने में न तो त्वरण नियम और न ही मौद्रिक कारकों का प्रयोग करता है। साथ ही वह दर्शाता है कि किसी वृद्धि कारक के न होने पर कैसे एक व्यापार चक्र पाया जाता है।

5. स्थिरीकरण नीतियाँ या व्यापार-चक्रों को नियंत्रित करने के उपाय (STABILISATION POLICIES OR MEASURES TO CONTROL TRADE CYCLES)

एक अर्थव्यवस्था में उतार-चढ़ाव को नियंत्रित करने हेतु समय-समय पर अनेक उपाय सुझाए और कार्यान्वित किए जाते हैं। उनका उद्देश्य मंदियों और तेजियों के कुप्रभावों से बचने के लिए आर्थिक क्रिया का स्थिरीकरण करना होता है। इसके लिए निम्न तीन उपाय अपनाए जाते हैं:

1. मौद्रिक नीति (Monetary Policy)

व्यापारिक उतार-चढ़ाव को नियंत्रित करने के उपाय के रूप में मौद्रिक नीति एक देश के केन्द्रीय बैंक द्वारा परिचालित की जाती है। केन्द्रीय बैंक साख की मात्रा और गुणवत्ता को नियंत्रित करने के लिए अनेक उपाय अपनाता है। तेजी में मुद्रा-पूर्ति के प्रसार को नियंत्रित करने हेतु वह बैंक दर को बढ़ाता है, खुले बाजार में प्रतिभूतियों को बेचता है, रिजर्व अनुपात में वृद्धि करता है और अनेक चयनात्मक साख नियंत्रण उपाय, जैसे सीमा आवश्यकताएँ बढ़ाना और उपभोक्ता साख को नियमन करना आदि, अपनाता है। अतः केन्द्रीय बैंक महंगी मुद्रा नीति अपनाता है। व्यवसाय और व्यापार द्वारा उधार लेना महंगा, कठिन और चयनात्मक हो जाता है। इस प्रकार, अर्थव्यवस्था में मुद्रापूर्ति की अधिक मात्रा नियंत्रित करने के प्रयत्न किए जाते हैं।

मंदी अथवा सुस्ती को नियंत्रित करने के लिए, केन्द्रीय बैंक सस्ती या सुगम (cheap or easy) मौद्रिक नीति अपनाता है। व्यापारिक बैंकों के रिजर्व बढ़ाने के लिए वह बैंक दर तथा बैंक की ब्याज दरें कम करता है। वह खुले बाजार में प्रतिभूतियाँ खरोदता है। वह कर्जों पर सीमा आवश्यकताएँ कम करता है और उपभोक्ताओं, व्यवसायियों, व्यापारियों आदि को अधिक उधार देने हेतु बैंकों

को प्रोत्साहित करता है।

मौद्रिक नीति की सीमाएँ (Limitations of Monetary Policy)

परन्तु मौद्रिक नीति तेजी और मंदी को नियंत्रित करने में अधिक प्रभावी नहीं होती है। यदि तेजी लागताधिक्य (cost-push inflation) से होती है तो स्फीति, कुल मांग, उत्पादन, आय और रोजगार को नियंत्रित करने में प्रभावी नहीं होगी। जहाँ तक मंदी का संबंध है, की महान मंदी का अनुभव बताता है कि जब व्यापारियों में निराशावादिता हो तो मौद्रिक नीति की सफलता बिल्कुल नहीं होती। स्थिति में, उनमें उधार लेने की प्रवृत्ति बिल्कुल नहीं होती, यदि व्याज दर बहुत कम भी हो। इसी प्रकार जिन उपभोक्ताओं की आय में कमी हो और जो बेरोजगार हों, वे अपने उपभोग व्यय कम कर देते हैं। ऐसी स्थिति में न तो केन्द्रीय बैंक और न ही व्यापारियों और उपभोक्ताओं को समस्त मांग बढ़ाने में प्रोत्साहित कर सकते हैं। इस प्रकार, आर्थिक उतार-चढ़ाव को नियंत्रित मौद्रिक नीति की सफलता बिल्कुल सीमित होती है।

2. राजकोषीय नीति (Fiscal Policy)

अकेली मौद्रिक नीति व्यापार-चक्रों को नियंत्रित करने की क्षमता नहीं रखती है। इसलिए, उसे क्षतिपूर्क (compensation) राजकोषीय नीति के साथ जोड़ा जाता है। तेजी में राजकोषीय उपाय जैसे अत्यधिक सरकारी व्यय, व्यक्तिगत उपभोग व्यय तथा सार्वजनिक निवेश नियंत्रित करने के लिए बहुत प्रभावी होते हैं। दूसरी ओर, वे मंदी में सरकारी व्यय, व्यक्तिगत उपभोग व्यय और सार्वजनिक निवेश बढ़ाने में सहायक होते हैं।

तेजी के दौरान नीति (Policy During Boom)

तेजी में निम्न उपाय अपनाए जाते हैं। वस्तुओं और सेवा की माँग कम करने के लिए, सरकार गैर-विकास क्रियाओं अनावश्यक व्यय को कटौती कर देती है। इससे निजी व्यय पर भी रोक लगती है, जो वस्तुओं और सेवाओं के लिए सरकारी व्यय निर्भर करती है। लेकिन सरकारी व्यय में कटौती करना कठिन है। फिर, आवश्यक और अनावश्यक सरकारी व्यय में घटे को नहीं है। इसलिए, इस उपाय को कराधान द्वारा संपूरित किया जाता है। व्यक्तिगत व्यय को कम करने के लिए, सरकार करों और वस्तु करों की दरों को बढ़ाती है। जब सरकारी व्यय से आय अधिक होती है तो सरकार आधिक्य बजट (surplus budget) की नीति अपनाती है। ऐसा या तो कर दें बढ़ाकर या सरकारी व्यय कम करके या दोनों द्वारा किया जाता है। ये गुणक को विस्तार द्वारा आय और समस्त मांग को कम कर देते हैं।

एक अन्य रोजकोषीय नीति जो प्रायः अपनायी जाती है वह जनता से अधिक उधार लेना है, जिसका प्रभाव जनता के पास मात्रा कम करना है। फिर, सार्वजनिक ऋण का पुनर्भुगतान बंद कर देना चाहिए और जब अर्थव्यवस्था स्थिर हो जाए, तो किसी की तिथि तक भुगतान स्थगित कर देना चाहिए।

मंदी के दौरान नीति (Policy During Depression)

मंदी के दौरान, सरकार सार्वजनिक व्यय में वृद्धि और करों में कटौती करती है तथा घाटे के बजट की नीति अपनाती है। समस्त मांग, उत्पादन, आय, रोजगार और कीमतों को बढ़ाते हैं। सार्वजनिक व्यय में वृद्धि वस्तुओं और सेवाओं के लिए मांग बढ़ाती है और गुणक द्वारा आय में वृद्धि लाती है। सार्वजनिक व्यय सड़कों, नहरों, बांध, पार्क, स्कूल, अस्पताल और अन्य निर्माण पर किए जाते हैं। वे श्रम और निजी निर्माण उद्योगों के लिए मांग उत्पन्न करते हैं और उनका पुनरुत्थान करने में सहायक होते हैं। वे भी उपभोक्ता वस्तु उद्योगों के लिए मांग को प्रोत्साहित करने के लिए बेरोजगारी बीमा और सामाजिक सुरक्षा जैसे उपायों पर व्यय बढ़ाती है। बजट घाटों का वित्त प्रबंध करने के लिए सरकार द्वारा उधार लेना, बैंकों और वित्तीय संस्थाओं के पास निष्क्रिय हुई मुद्रा, निवेश योजनाओं में प्रयोग हो जाती है।

निष्कर्ष (Conclusion)

प्रतिचक्रीय राजकोषीय नीति की प्रभावशीलता नीति कार्य के सही समय पर लागू करने और सार्वजनिक निर्माण कार्य को मात्रा और आयोजन पर निर्भर करती है।

3. प्रत्यक्ष नियंत्रण (Direct Controls)

प्रत्यक्ष नियंत्रणों का उद्देश्य कीमत स्थिरता के लिए संसाधनों का सही आवंटन करना है। वे अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को प्रभावित करने के लिए होते हैं। वे विशेष उपभोक्ताओं और उत्पादकों को प्रभावित करते हैं। वे राशनिंग, लाइसेंसिंग, कीमत और मजदूरी नियंत्रण, निर्यात कर, विनिमय नियंत्रण, अभ्यंश (कोटा), एकाधिकार नियंत्रण आदि के रूप में होते हैं। वे स्फीतिकारी दवावों से उत्पन्न होने वाली रुकावटों और कमियों को दूर करने के लिए अधिक प्रभावी होते हैं। वे स्फीतिकारी दवावों से उत्पन्न पर निर्भर करती है। अन्यथा, उनसे काला बाजारी, भ्रष्टाचार, लंबी कतारें, सट्टाबाजी आदि उत्पन्न होते हैं। इसलिए उनका प्रयोग केवल युद्ध, खराब फसलों और अत्यधिक स्फीति जैसे संकटों में ही करना चाहिए।

निष्कर्ष (Conclusion)

स्थिरीकरण नीति के अनेक उपायों में से कोई अकेला तरीका चक्रीय उतार-चढ़ाव को नियंत्रित करने के लिये पर्याप्त नहीं है। इसलिए सभी तरीकों का एक-साथ प्रयोग करना चाहिए। मौद्रिक नीति लागू करना आसान है परन्तु वह कम प्रभावी है, क्योंकि पूँजीवादी व्यवस्था में चक्रीय नीति और प्रत्यक्ष नियंत्रणों का प्रचालन करना कठिन है परन्तु वे अधिक प्रभावी हैं। क्योंकि पूँजीवादी व्यवस्था में चक्रीय उतार-चढ़ाव विद्यमान रहते हैं, इसलिए उनका पूर्णरूप से समाप्त करना संभव नहीं है। कुछ उतार-चढ़ाव आर्थिक वृद्धि के लिए लाभदायक हो सकते हैं और अन्य अवांछनीय। स्थिरीकरण नीति को अवांछनीय उतार-चढ़ाव को नियंत्रित करना चाहिए।